बहुत सारे बावर्ची

कैरोलिन क्रॉल

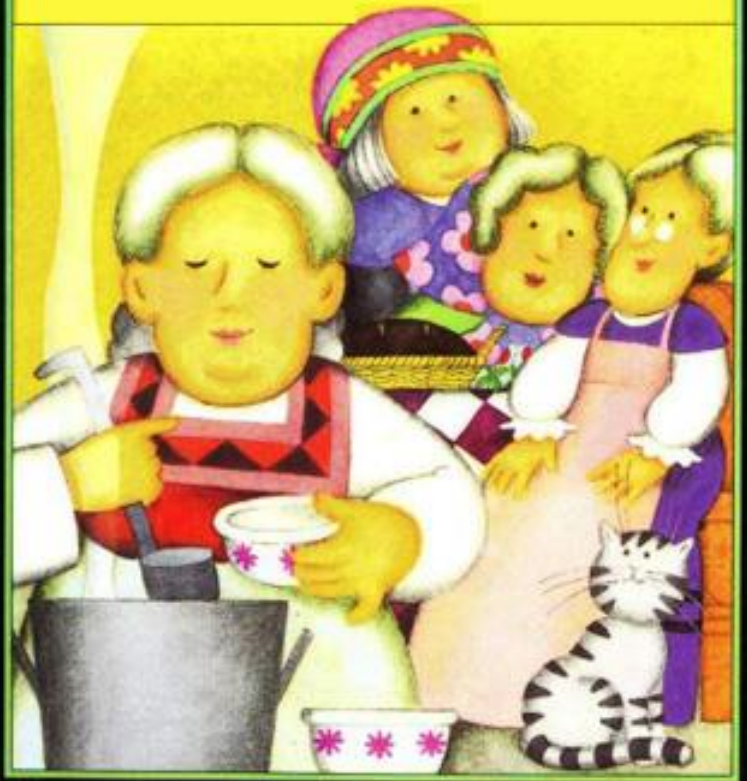

बहुत सारे बावर्ची

कैरोलिन क्रॉल

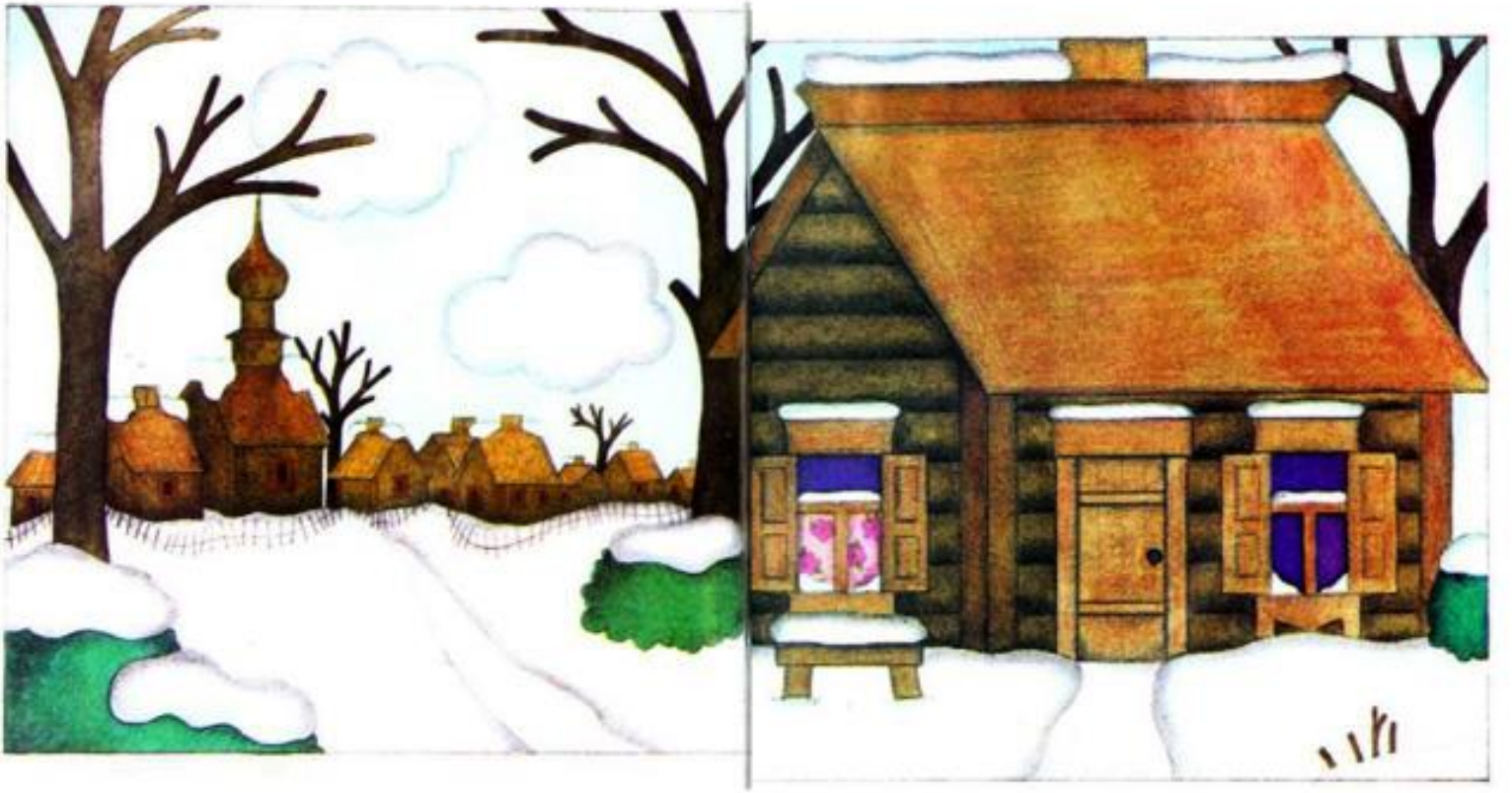

बाबा एडिस, शहर के किनारे लकड़ी
के एक छोटे से घर में रहती थीं.

एक सुबह जब वो उठीं,

तो मौसम बहुत ठंडा था.

"मेरी हड्डियों को गर्म रखने के लिए आज सूप बनाने के लिए एक अच्छा दिन है."

बाबा एडिस ने अपनी ऊनी पोशाक और मोज़े पहनते हुए कहा.

उन्होंने अपना पुराना सूप के बड़ा बर्तन बाहर निकाला, उसमें पानी भरा और उसे स्टोव पर उबलने रख दिया.

"अब देखती हूँ कि मेरे पास और क्या-क्या है," बाबा एडिस ने कहा.

उनके पास एक बची हुई हड्डी थी, एक कप बीन्स, कुछ गाजर, पालक, गोभी, और स्वाद के लिए एक पीला प्याज था. जैसे ही सूप पकना शुरू हुआ, उससे हवा में एक अच्छी महक भर गई.

बाबा बाशा, जो वहां से गुजर रही थीं ने वो अच्छी महक सूंघी और वे घर में अंदर आ गईं.

"वाह! क्या स्वादिष्ट महक है?" बाबा बाशा ने कहा.

"इस ठंड में अपनी हड्डियों को गर्म करने के लिए मैं कुछ सूप बना रही हूँ," बाबा एडिस ने कहा.

"जब सूप यह तैयार हो जाए तो आप उसे ज़रूर पिएं."

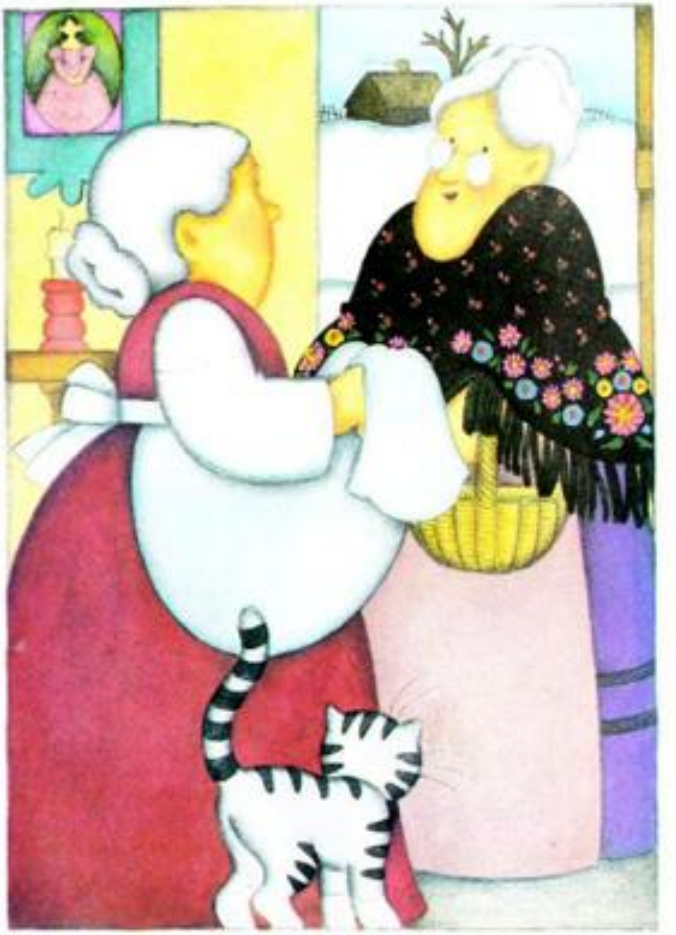

"मैं ज़रूर पियूँगी," बाबा बाशा ने कहा.

बाबा बाशा ने उसे चखा.

"इसमें कुछ नमक की कमी है," उन्होंने कहा, और फिर उन्होंने बर्तन में एक मुट्ठी नमक डाल दिया.

फिर उन्होंने सूप को दुबारा चखा.

"अब स्वाद बेहतर है," उन्होंने कहा, और फिर वो बैठ गईं.

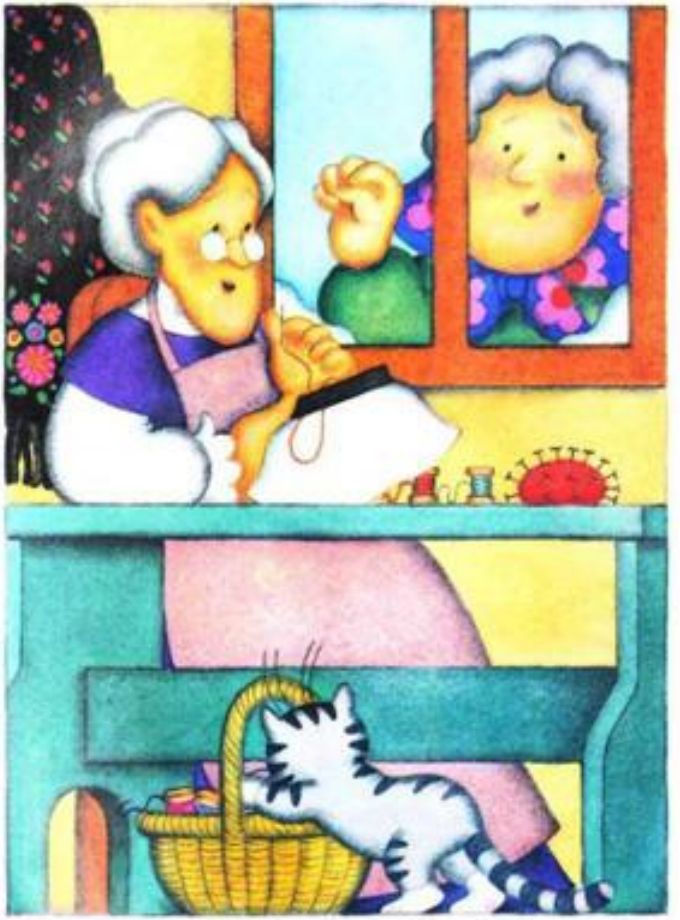

थोड़ी ही देर में खिड़की पर एक और चेहरा दिखाई दिया.

वो बाबा येट्टा थीं.

"अंदर आओ," बाबा बाशा ने उन्हें बुलाया.

"बाबा एडिस इस ठंड वाले दिन अपनी हड्डियों को गर्म रखने के लिए स्वादिष्ट सूप बना रही हैं. और अगर आप कुछ देर रुकें तो आप भी सूप पी सकती हैं."

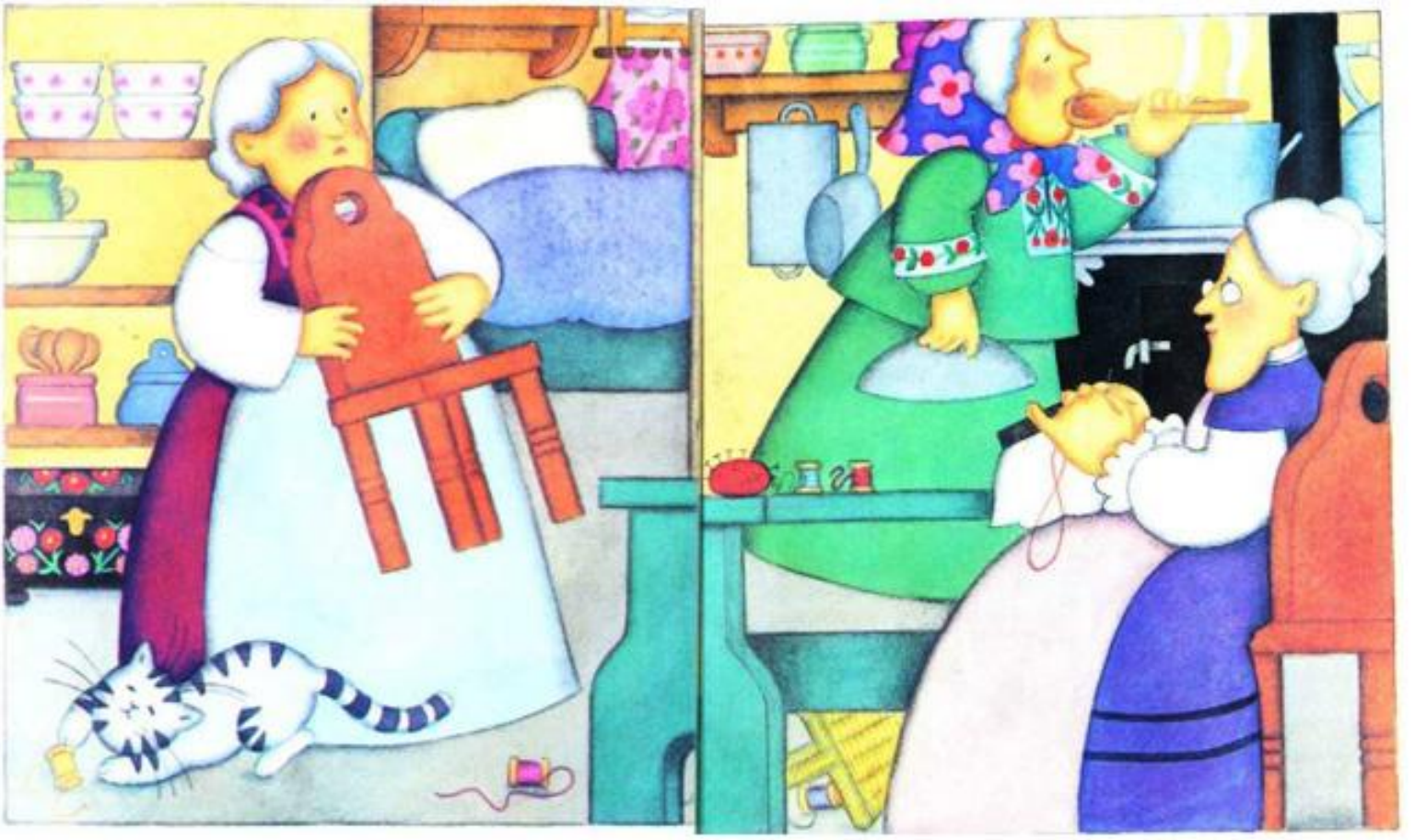

बाबा एडिस ने एक और कुर्सी खींची.

बाबा येट्टा ने सूप चखा.

"हम्म," उन्होंने कहा. "इसमें कुछ और पड़ना चाहिए. और मुझे पता है - वो है मिर्च!

बाबा येट्टा ने काली मिर्च को पीसने वाली चक्की उठाई और उसे कई बार बर्तन में घुमाया.

"बढ़िया!" उन्होंने कहा और फिर वो बाबा बाशा के साथ बैठ गईं.

कुछ ही देर में दरवाजे पर एक दस्तक हुई.

"लगता हैं यहाँ कोई पार्टी चल रही है. अरे वो सुन्दर महक किस चीज़ की है, बाबा एडिस?"

बाबा मोल्का बाजार से घर जा रही थीं.

"कृपया अंदर आएं और आप भी हमारे साथ जुड़ें," बाबा बाशा ने उन्हें अंदर बुलाया.

"बाबा एडिस इस ठंड के दिन अपनी हड्डियों को गर्म रखने के लिए स्वादिष्ट सूप बना रही हैं."

"और तैयार होने पर उन्होंने हम सभी को सूप पीने के लिए आमंत्रित किया है. सूप बहुत सारा है इसलिए आपका भी स्वागत है."

बाबा एडिस एक और कुर्सी लेने अपने कमरे में चले गईं.

जब वो जा रही थीं, तभी बाबा मोल्का ने सूप का स्वाद चखा.

"अरे!" उन्होंने कहा, और फिर उन्होंने अपनी टोकरी में हाथ डाला और एक मोटी लहसुन की गाँठ निकाली.

"इस सूप में कुछ लहसुन की कमी है," उन्होंने कहा, और फिर उन्होंने सूप में चार लहसुन की फलियां डाल दीं.

"लहसुन को अपना काम करने में थोड़ा समय लगेगा," उन्होंने कहा, और फिर वो प्रतीक्षा करने बैठ गई.

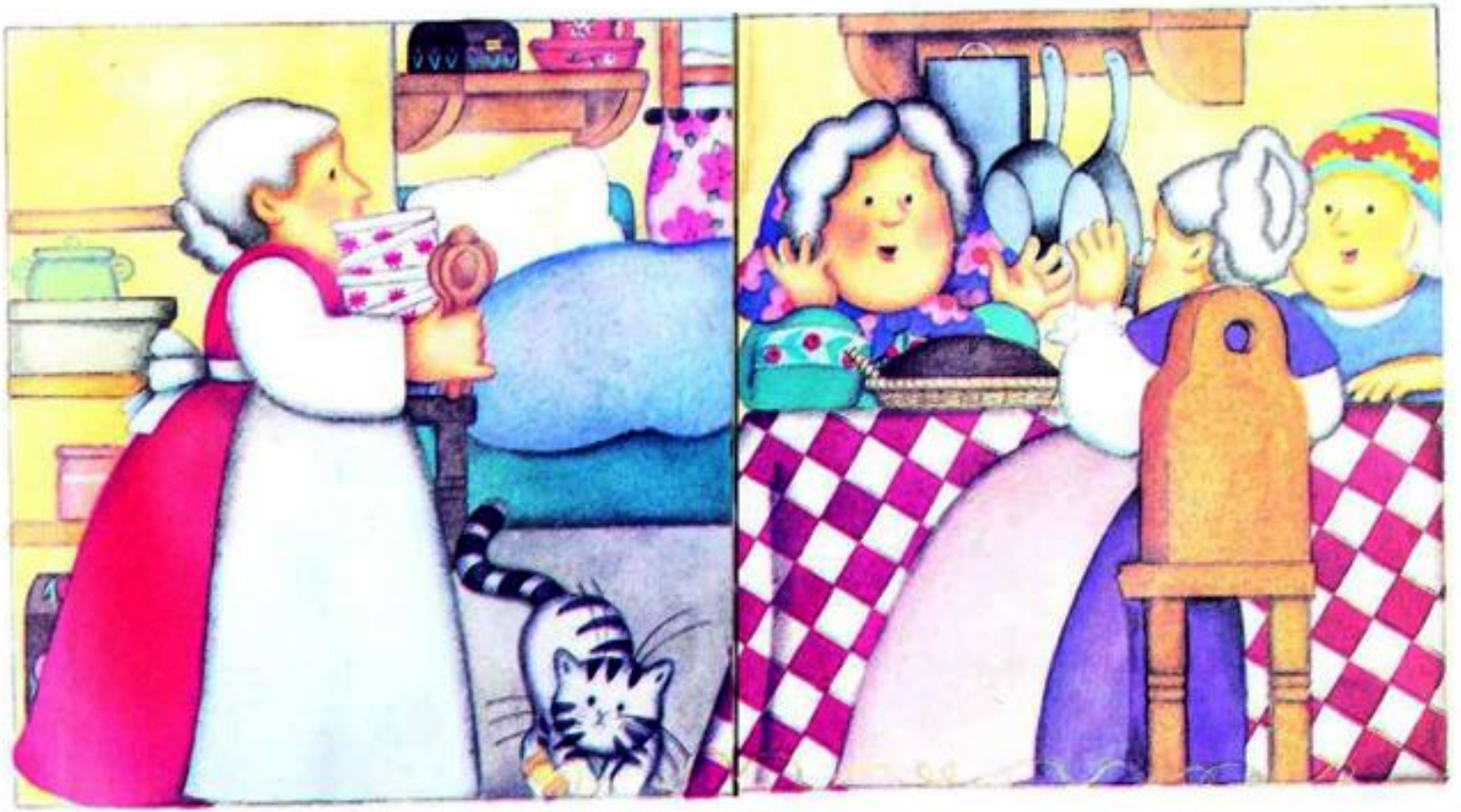

बाबा एडिस ने दराज़ में से
कटोरे और चम्मच निकाले.

उन्होंने मेज पर रखी टोकरी में
एक बड़ी डबलरोटी रखी.

कुछ देर बाद बाबा बाशा बर्तन में उबलते सूप का स्वाद चखने और उसे सूंघने गईं.

"हम्म," उन्होंने कहा. "बस एक पानी का छींटे और कुछ नमक से सूप एकदम बढ़िया बन जाएगा."

"क्या सूप लगभग तैयार है?" बाबा येट्टा ने पूछा. उन्होंने बर्तन का ढक्कन उठाया और एक गहरी सांस ली.

"सूप में मसालों की कोई लज़ीज़ खुशबू नहीं आ रही है," उन्होंने कहा, और फिर उन्होंने काली मिर्च की चक्की उठाई.

बाबा मोल्का ने कहा, "मुझे सूप को ज़रा चलाने दो," और फिर बाबा येट्टा ने बड़े चमचे से सूप को हिलाया.

"थोड़ा पतला दिखता है," बाबा मोल्का ने कहा.

"लहसुन की एक या दो फलियां इसमें और पड़ेंगी."

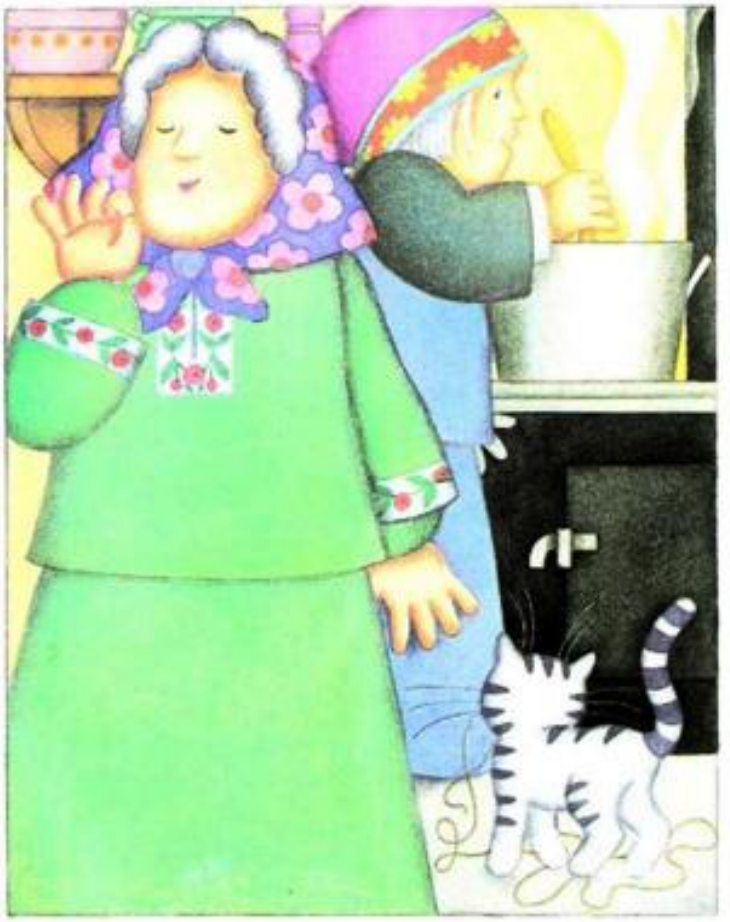

"मुझे लगता है कि सूप तैयार है," बाबा एडिस ने कहा.

"मुझे लगता है कि अब आप सभी लोगों को काफी भूख लग रही होगी."

उन्होंने सूप को कटोरों में डाला और उसे अपने मेहमानों को दिया.

"सूप देखने में काफी स्वादिष्ट लग रहा है," बाबा बाशा ने कहा.

"सूप में से अच्छी खुशबू आ रही है," बाबा येट्टा और बाबा मोल्का ने कहा.

फिर सब लोग टेबल पर बैठ गए.

लहसुन से सूप बहुत तीखा हो गया है!
नमक बहुत ज्यादा है!
मिर्ची बहुत है!
सूप एकदम बर्बाद है!

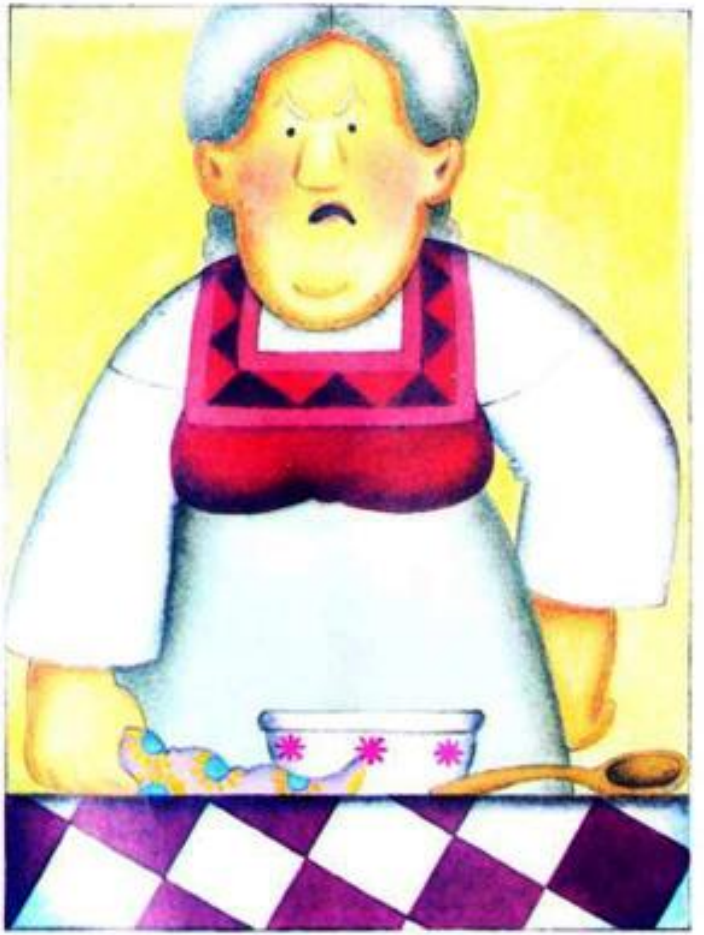

बाबा एडिस ने कहा, "मुझे लगता है कि कई रसोइयों ने मिलकर सूप को खराब कर दिया है. अब हमारे पास खाने के लिए सिर्फ डबलरोटी और चाय ही है."

"हमें बहुत खेद है, बाबा एडिस," बाबा बाशा ने कहा.

"काश, हमारे पास दुबारा से सूप बनाने का कोई तरीका होता," बाबा येट्टा ने कहा.

"ज़रा ठहरो!" बाबा मोल्का ने कहा.

फिर उन्होंने अपनी टोकरी उठाई.

"मेरे पास एक गोभी, आलू कुछ बीन्स और गाजर हैं.

अगर हम सूप बनाने में मदद करेंगे तो इस बार हमें एक योजनाबद्ध तरीके से काम करेंगे.

हममें से प्रत्येक एक-एक काम की ज़िम्मेदारी लेगा."

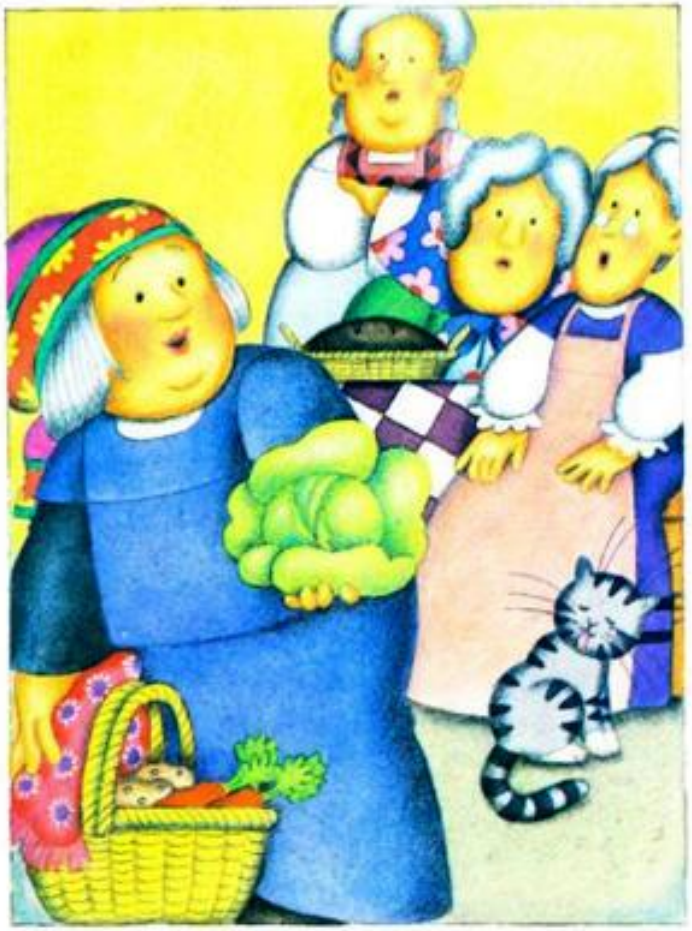

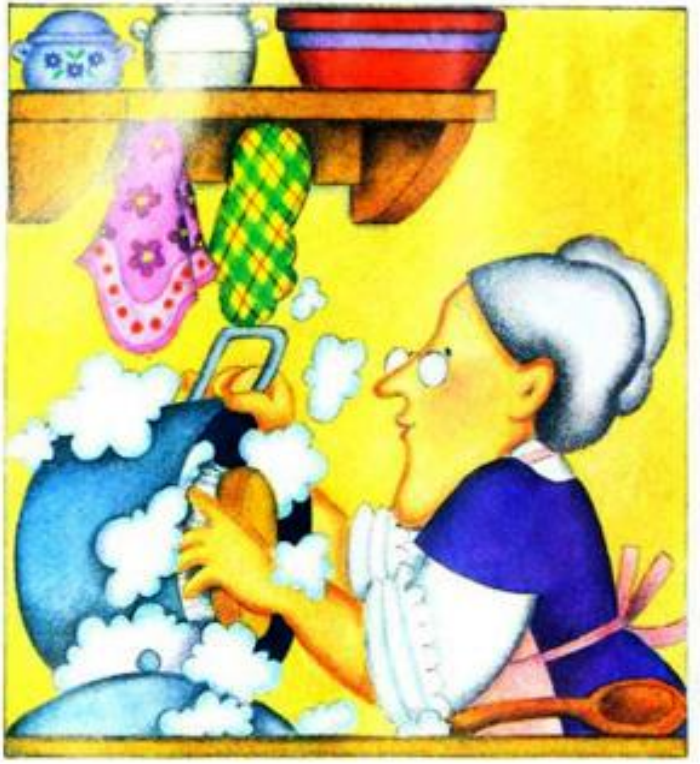

बाबा बाशा ने कहा, "मैं बर्तन को साफ़ करूँगी और पानी उबालने के लिए रखूँगी."

"मैं सब्ज़ियों को धोऊंगी," बाबा येट्टा ने कहा.

"और मैं सब्ज़ियों को काटूंगी," बाबा मोल्का ने कहा. और फिर वे सब अपने-अपने काम में लग गए.

जल्द ही सूप उबलने लगा.

बाबा एडिस अब बड़ा अच्छा महसूस कर रही थीं.

उन्होंने ढक्कन उठाया और सूप का स्वाद चखा.

“इस बार मैं अकेले ही सूप में नमक, काली मिर्च और लहसुन डालूंगी," उन्होंने कहा.

ध्यान से उन्होंने सब चीज़ों को नापा.

फिर उन्होंने दुबारा सूप का स्वाद चखा.

जब सूप तैयार हो गया.

तब बाबा बाशा, बाबा येट्टा, बाबा मोल्का,

और बाबा एदिस इतनी भूखी थीं,

कि सबने दो-दो कटोरे सूप पिया.

जब खाना समाप्त हो गया
तब बाबा बाशा ने मेज साफ की.

बाबा येट्टा ने बर्तन धोए.

और बाबा मोल्का ने बर्तन सुखाए.

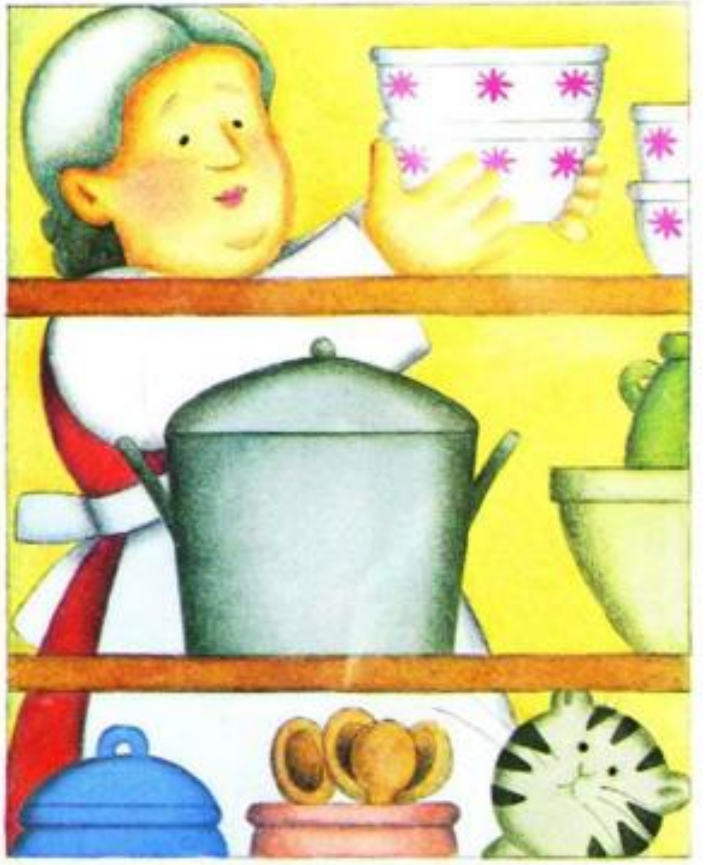

और बाबा एडिस ने बर्तनों को शेल्फ में रखा.

फिर सभी ने एक-दूसरे से शुभ रात्रि कहा.

समाप्त